प्रातःक्लास ओमशांति 28.9.67

रिकार्ड– तुम्हें पाके.....ओमशांति। इसमें बोलने का नहीं रहता । यह समझने की बात है। मीठे2 रुहानी बच्चे समझ रहे हैं कि हम फिर से पवित्र देवता बन रहे हैं। सम्पूर्ण निर्विकारी बन रहे हैं। बाप आकर कहते हैं बच्चे काम को जीतो अर्थात् पवित्र बनो। बच्चों ने गीत सुना। अब फिर से बच्चों को स्मृति आ गई है कि हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेते हैं, जो कोई छीन न सके। वहां दूसरा कोई छीनने वाला होता ही नहीं है। इसको कहा जाता है अद्वैत राज्य। फिर बाद में रावणराज्य दूसरे का होता है। अभी तुम समझ रहे हो। समझाना भी ऐसे है हम फिर से वाइसलेस भारत को बनाय रहे हैं श्रीमत पर। उंच ते उंच भगवान तो सब कहेंगे। उनको ही बाप कहा जाता है। तो यह भी समझाना है। लिखना भी है भारत जो सम्पूर्ण निर्विकारी स्वर्ग था वह अभी विकारी नर्क बन गया है। फिर हम भारत को श्रीमत पर स्वर्ग बनाय रहे हैं। बाप जो बतलाते हैं वह नोट कर उस पर विचार सागर मंथन कर लिखने में मदद करनी चाहिए। ऐसा2 क्या लिखें जो मनुष्य समझे कि बरोबर भारत वायसलेस था। रावण राज्य था नहीं। बच्चों की बुद्धि में है अभी हम भारतवासियों को वाइसलेस बनाय रहे हैं। पहले अपन को भी देखना है हम निर्विकारी बने हैं?ईश्वर को मैं ठगता तो नहीं हूं?ऐसे नहीं कि ईश्वर हमको देखता थोड़े ही है। तुम्हारे मुख से यह अक्षर निकल न सके। तुम जानते हो पवित्र बनाने वाला पतित–पावन एक ही बाप है। भारत वाइसलेस था तो स्वर्ग था। यह (लक्ष्मी–नारायण) सम्पूर्ण निर्विकारी है ना। यथा राजा–रानी तथा प्रजा होगी। तब तो सारे भारत को स्वर्ग कहा जाता है। अभी नर्क है। 84जन्म भारतवासियों लिए ही समझाई जाती है। यह सीढ़ी बहुत अच्छी चीज है। बाबा यह 20/25बनाय देंगे, जो कोई अच्छा हो उनको सौगात भी दे सकते हो। बड़े आदमियों को बड़ी2 सौगात मिलती है ना। इंदिरा गांधी बाहर जाती है तो उनको हीरों की हार–कंगन आदि मिलती है। विलायत में ज्वेलरी तो बहुत होते हैं। तो तुम भी जो आते हैं उनको समझाय कर ऐसे2 सौगात दे सकते हो। चीजें हमेशा तैयार रखी रहनी है देने लिए। तुम्हारे पास भी नालेज तैयार रहनी है। इनमें पूरा ज्ञान है। हमने 84जन्म कैसे लिए हैं। यह याद रहना चाहिए। यह समझ की बात है ना। जरूर जो पहले2 आये हैं उन्होंने ही 84जन्म लिए हैं। बाप 84जन्म बताय फिर कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अंत में साधारण तन में प्रवेश करता हूं। फिर इनका नाम रख देते हैं ब्रह्मा। इन द्वारा ब्राह्मणों की रचना रचता हूं। नहीं तो ब्रह्मा कहां से लाउं?ब्रह्मा का बाप कब सुना?जरूर भगवान ही कहेंगे। (विष्णु के नाभी से ब्रह्मा कहते हैं) इनका अर्थ समझ न सकेंगे। ब्रह्मा और विष्णु को दिखाते भी सूक्ष्मवतन में हैं। बाप तो कहते हैं मैं इनके 84जन्मों के अंत में प्रवेश करता हूं। एडॉप्ट किया जाता है ना तो नाम बदली किया जाता है। सन्यास भी कराया जाता है। सन्यासी जब सन्यास करते हैं तो फौरन भूल नहीं जाते हैं। ....जीते हैं याद जरूर रहती है। तुमको भी याद रहेंगे ;परंतु तुमको उनके लिए वैराग्य है ;क्योंकि तुम जानते हो यह सब कब्रदाखिल है। इसलिए हम उनको याद कर क्या करें?ज्ञान से सब कुछ समझना है अच्छी रीति। वह भी ज्ञान से ही घर–बार छोड़ते हैं। उनसे पूछा जाये घर–बार कैसे छोड़ा तो बताते ही नहीं हैं फिर उनको युक्ति से कहा जाता है आपको वैराग्य कैसे आया हमको सुनाओ तो हम भी ऐसा करें। टेम्पटेशन तो चाहिए ना। तुम भी टैम्पटेशन देते हो कि पवित्र बनो। बाकी तुमको याद सब है। इस ब्रह्मा को भी सब याद है। छोटेपन से लेकर सब बताय सकते हैं। बुद्धि में सारा ज्ञान है। कैसे यह सब ड्रामा के एक्टर्स हैं जो पार्ट बजाते आये हैं। अभी कलियुगी कर्मबंधन (तोड़ने) का है सभी का। फिर जावेंगे शांतिधाम। वहां से फिर सबका नया बंधन जुटेगा। समझाने की प्वाइंट्स भी बाबा बहुत अच्छी रीति देते रहते हैं। यही भारतवासी आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले थे। वायसलेस थे। फिर 84जन्मों बाद विषस बने हैं। फिर वाससलेस बनना है ;परंतु पुरुषार्थ कराने वाला चाहिए। अभी तुमको बाप ने बताया है। बाप कहते हैं तुम वही हो ना।

बच्चे भी कहते हैं बाबा आप वह ही हो। बाप कहते कल्प2 भी पढ़ाय कर तुमको राज–भाग दिया था। कल्प2 ऐसे करते रहेंगे। ड्रामा में जो कुछ हुआ ,विघ्न पड़ी ,फिर भी पड़ेगी। जीवन में क्या2 होता है याद तो रहता है ना। इनको तो सभी याद है। बतलाते हैं कैसे छोटेपन में गांव का छोरा था। छीनल टोपी (पुरानी टोपी) नंगे पांव घूमते रहते थे। बाबा को सब याद है। कैसे बकरी का दूध पीता था। कहां रहता था। अभी भी वह मकान आदि दिखलाय सकता हूं ;परंतु मकान आदि तो सब मुसलमानों ने नये बनाय लिए होंगे। गांवरे का छोरा और फिर वैकुंठ का मालिक। वैकुंठ में गांवरा कैसे होगा?यह तुम बच्चे अभी समझते हो। इस समय तुम्हारे लिए यह पुरानी दुनियां गांवरा है ना। कहां वैकुंठ ,कहां नर्क। मनुष्य तो बड़े2 महल, बिल्डिंग्स आदि देखो समझते हैं यह ही स्वर्ग है। बाप तो कहते हैं यह सब मिट्टी पत्थर है। इनकी कोई वैल्यु नहीं। वैल्यु सबसे जास्ती हीरों की होती है। बाप कहते हैं विचार करो सतयुग में तुम्हारे सोने के महल कैसे थे। सोने की ईंटें थीं। वहां सोना तो बहुत होता है ना। अभी तो पिछाड़ी है। खानियां खाली होती जाती हैं। वहां तो सब खानियां भरी रहती हैं। ढेर का ढेर सोना होता है। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। कोई समय मुरझाइस आती है तो बाबा ने समझाया है कोई2 ऐसे रिकार्ड हैं जो तुमको फौरन खुशी में लाय देंगे। सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। समझते हो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। राजा का बच्चा समझेगा हम इस हद की राजाई का वारिस हैं। तुमको कितना नशा रहना चाहिए। हम बेहद के बाप की वारिस है। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। हम 21जन्मों लिए वारिस बनते हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। जिसका वारिस बनते हैं उनको भी जरूर याद करना है। याद करने बिगर तो वारिस बन न सके। याद करके पवित्र बने तब ही वारिस बन सकते हैं। तुम जानते हो श्रीमत पर हम विश्व का मालिक डबल सिरताज बनते हैं। जन्म व जन्म हम राजाई करेंगे। मनुष्यों को भक्तिमार्ग में होता है विनाशी दान–पुण्य। तुम्हारा है अविनाशी ज्ञान धन। तुमको कितनी बड़ी लाटरी मिलती है। कर्मों अनुसार फल मिलता है ना। कोई बड़े राजा का बच्चा बनता है तो बड़ी हद की लाटरी कहेंगे। सिंगल ताज वाले सारे विश्व के मालिक तो बन न सके। डबल ताज वाले विश्व के मालिक बनते हैं। इस समय दूसरी कोई राजाई है नहीं। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है तो दूसरे धर्म वाले आते हैं। वह जब तक वृद्धि को न पाये तो पहले वाले राजाएं विकारी बनने के कारण मतभेद में आय टुकड़े2 अलग कर देते हैं। पहले तो सारे विश्व पर एक ही राज्य चलता है। वहां ऐसे नहीं कहेंगे कि यहां अगले जन्मों की कर्म का फल है। अभी बाप तुम बच्चों को श्रेष्ठ कर्म सिखलाय रहे हैं। जैसा2 जो कर्म करेगा ,सर्विस करेगा तो इसका रिटर्न में ऐसा मिलेगा। अच्छा कर्म ही करना है। कोई बुरा कर्म करते हैं तो इसके लिए श्रीमत लेते हैं। घड़ी2 पूछना चाहिए पत्र में। अभी प्राइम मिनिस्टर है, तुम समझते हो कितनी पोस्ट आती होगी ;परंतु वह कोई अकेले नहीं पढ़ते हैं। इनके आगे बहुत होते हैं। वह सारी पोस्ट देखते हैं, जो बिल्कुल मुख्य होगी सब पास करेंगे तब प्राइममिनिस्टर के टेबल पर रखेंगे। यहां भी ऐसे होता है। मुख्य2 पत्रों का तो फौरन रेस्पांड दे देता हूं। बाकी के लिए यादप्यार लिख देते हैं। एक2 को अलग पत्र बैठ लिखें यह तो हो न सके। बड़ा मुश्किल है। बच्चों को सिर्फ लाल अक्षर मिलती है तो कितने खुश होते हैं। ओहो, आज बेहद का बाप की दादा द्वारा चिट्ठी आई है। लिखते भी हैं शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा। रेस्पांड भी शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा करते हैं। बच्चां को बड़ी खुशी होती है। सबसे जास्ती गद2 होती हैं बांधेलियां। ओहो, हम बंधन में हैं। बेहद का बाप हमको कैसे चिट्ठी लिखते हैं। नयनों पर रखते हैं। अज्ञानकाल में भी पति को परमात्मा समझने वालों को पति की चिट्ठी आती है तो उनकी चुम्मन करेंगे। तुम्हारे में भी कोई2 की बापदादा का पत्र देख एकदम रोमांच खड़ी हो जाती है। प्रेम के आंसू आ जाते हैं। चुमन करेंगे, आंखों पर रखेंगे। बहुत प्रेम से पत्र पढ़ते हैं। बांधेलियां कोई कम हैं क्या?बाबा लिखते हैं जबरदस्ती

अगर करते हैं इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। अगर तुम्हारी आश है ,क्रिमिनल आई है तो फिर दोष है। लाचारी हालत में कोई दोष नहीं। राक्षसों के हाथ मेंा आ जाते हैं तो फिर कर ही सकेंगे?इस समय सभी कीचक हैं ना। जो भी पतित हैं बड़े2 वह कीचक हैं। है तो मनुष्य ना। फिर कोई सूपनखा ,पूतनायें भी होती हैं। यह नाम आसुरी है। विकार बिगर पतियों को छोड़ती नहीं। लड़ाई होती है ना। कहां माया भी जीत लेता है। कोई समझते हैं हमको तो पवित्र जरूर बनना है। भारत वायसलेस था ना। अब विषस है। अब जो वायसलेस बने होंगे वह ही फिर पुरुषार्थ करेंगे कल्प पहले वाले। तुम बच्चों को समझाना बहुत सहज है। तुम्हारा भी यह प्लैन है ना। गीता का युग चल रहा है। गीता का ही पुरुषोत्तम संगमयुग गाया जाता है। तुम लिखो भी ऐसेस गीता का पुरुषोत्तम संगमयुग है। जबकि पुरानी दुनियां बदल नई होती है। तुम्हारी बुद्धि में है बेहद का बाप जो हमारा टीचर भी है उनसे हम राजयोग सीख रहे हैं। अच्छी रीति पढ़ेंगे तो डबल सिरताज बनेंगे। कितना बड़ा स्कूल है। राजधानी स्थापन होती है। प्रजा भी अनेक प्रकार की होगी। राजाई वृद्धि को पाती रहेगी। जैसा जो पुरुषार्थ करेंगे वह पहले आते रहेंगे। कम ज्ञान उठाने वाले पीछे आवेंगे। यह सब बना बनाया खेल है। हद के नाटक में भी नम्बरवार एक्टर्स आते रहते हैं। पिछाड़ी में पार्ट पूरा होता है। फिर नई सिरे रीपीट होगा। यह भी ड्रामा का चक्र रिपीट होता है ना। अभी तुम बाप से वर्सा ले रहे हो। बाप कहते हैं पवित्र बनो। अगर स्त्री पतित बननी चाहती हो तो गेटआउट। परवाह न करनी चाहिए। रोटी–टुकड़ तो मिल सकता है। बच्चों को पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। भूल होती है तो अपने से प्रतिज्ञा करनी चाहिए ऐसा फिर कब नहीं करेंगे। अपन को थप्पड़ लगाना चाहिए तो याद रहेगी। बाबा भक्तिमार्ग का भी मिसाल बताते हैं। पूजा के टाइम बुद्धियोग बाहर जाता था तो अपना कान पकड़ते हैं। चमाट लगाते थे। अब यह तो है ज्ञान। इसमें भी मुख्य याद की बात है। याद न रहे तो अपन को थप्पड़ मारना चाहिए। माया मेरे उपर जीत क्यों पाती है?क्या मैं इतना कच्चा हूं?मुझे तो इन पर जीत पानी है। अपने आप को अच्छी रीति सम्भालना है। अपने से पूछो मैं इतना महावीर हूं?औरों को भी महावीर बनाने पुरुषार्थ करता हूं। जितना औरों को आप समान बनाउंगा तो हमारा दर्जा उंच होगा। रेस करनी है। हम तो अपना राज–भाग जरूर लेंगे। अगर हमारे में भी क्रोध है तो दूसरे को कैसे कहेंगे कि क्रोध न करना है। सच्चाई नहीं हुई ना। लज्जा आनी चाहिए। दूसरे को समझाता हूं अपना करता नहीं हूं। वह उंच बन जाए हम नीचे ही रह जावें यह भी कोई पुरुषार्थ है। तब बाबा ने एक पंडित की कथा सुनाई थी। बाप को याद करते2 इस विषया सागर से क्षीर सागर में चले जाते हो। बाकी सब मिसाल बाप बैठ समझाते हैं। जो फिर भक्तिमार्ग में रिपीट करते हैं। भ्रमरी का भी मिसाल यहां का है। तुम ब्राह्मणियां हो ना। ब्रह्माकुमार–कुमारियां सच्चे ब्राह्मण ठहरे। प्रजापिता ब्रह्मा कहां है?जरूर यहां होगा ना। शंकराचार्य ने भी कहा ब्रह्मा भी उतर आये.....ऐसे कहते हैं। तुम भारतवासियों को समझाते हो तो गृहस्थ आश्रम में है। सन्यासी तो सुख को ही नहीं मानते। वह तो कहते हैं सतयुग में भी क्या था। कंस,जरासिंधी आदि थे। बातों को ही खराब कर दिया है। अभी तुम बच्चों को सब बुद्धि में है। तुमको बहुत होशियार होना चाहिए। प्लैन देखा ना। बाबा का भी प्लैन है ना मनुष्य से देवता बनाने लिए। यह ....चित्र भी है समझाने लिए। इसमें लिखत भी ऐसी होनी चाहिए। गीता का भगवान का भी प्लैन है। वह तो बिल्कुल सहज है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना हुआ है। यह शिवबाबा का प्लैन है ना। हम ब्राह्मण–ब्राह्मणियां हैं ना। ब्राह्मण है चोटी। एक की बात थोड़े ही होती। प्रजापिता ब्रह्मा ,तो चोटी ब्राह्मणों की हुई ना। ब्रह्मा है तो जरूर ब्राह्मणों को इस समय बड़ा भारी कुटुम्ब होगा, जो फिर तुम दैवी कुटुम्ब में आते हो। इस समय तुमको बहुत खुशी है ;क्योंकि लाटरी मिलती है। तुम्हारा नाम बहुत है। वंदेमातरम्। शिव की शक्तिसेना तुम हो। वह तो सब हैं झूठे। बहुत होने कारण मनुष्य मूंझ पड़ते हैं। इसलिए राजधानी स्थापन

करने में मेहनत लगती है। बाप कहते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। इनमें मेरा भी पार्ट है। मैं हूं सर्वशक्तिवान। मेरे को याद करने से तुम पवित्र बन जाते हो। सबसे जास्ती चकमक है शिवबाबा। वह ही उंच ते उंच रहते हैं। मंदिर भी उनकी उपर2 में बनाते हैं। अभी तो गृहस्थियों के लिए शहर में भी बनाने लग पड़े हैं। नहीं तो हमेशा मंदिर पहाड़ों पर ,जंगलों में ही होते हैं। दिन–प्रतिदिन बहुत अच्छा समझते रहते हो औरों को भी समझाने लिए। कांटों को फूल बनाने में मेहनत तो लगती है ना। बाप कहते हैं यह खेल है। तुम कैसे 84जन्म लेते हो यह किसको भी समझाना बहुत सहज है। पुरुषार्थ करते2 कर्मातीत अवस्था को पाना है। रिजल्ट तो अंत में ही निकलेगी। अभी सब पुरुषार्थी हैं। तुम बच्चों को यह नशा रहना है हम ईश्वरीय परिवार के हैं। बड़ों को भी तुम जानते हो। सबसे बड़े ते बड़े बाप को जानते हो। तुम बतलाते हो कृष्ण के चरित्र कुछ नहीं हैं। यह शास्त्र सभी हैं भक्तिमार्ग के। फिर यह प्रायःलोप हो जावेगा। बाबा ने एक चित्र दिखाया सर्प पर कृष्ण डांस करता.....। मनुष्य चित्रों पर भी कितना चलते हैं। बाप समझाते हैं यह सब बनावटी की आसुरी चित्र है। सर्प ,कालीदह आदि वहां कहां से आई?फिर सब गोपियां दिखाते हैं। डांस कर रहे हैं। वह तो कालीदह में रहते थे ना। फिर गोपियां कहां खड़ी रहें जो डांस करती थीं। यह सब है राग चित्र। दंत कथायें। यह सब सुनते2 मनुष्यों का माथा ही खालीहो गया है। बाप कहते हैं तुमको कितना धनवान बनाया फिर रावणराज्य में तुम कितने खाली इनसालवेंट बन गए हो। तमोप्रधान बुद्धि हो गए हो। भारत में कितने अनेक धर्म हैं। यह अभी तुम समझाय सकते हो। समझाने के लिए भिन्न युक्तियां रच रहे हो। यह कितने झूठे चित्र हैं। वह भी तुम चाहो तो ढेर करके रख सकते हो। यह झूठ है। यह सच्च। भक्तिमार्ग में इन चित्रों पर भी कितना खर्चा करते हैं। ज्ञान तो है पढ़ाई। जो बाप ही आय पढ़ाते हैं और पवित्र बनाते हैं। शास्त्रों में कुछ एम ऑब्जेक्ट है नहीं। करके पंडित बनेगा। उन्हों को टाइटिल बहुत मिलती है। उन्हों का फाउंडेशन जो है वहां घुसना चाहिए। हम तो कहेंगे यह सभी है ड्रामा। कोई का दोष नहीं। इन्हों का पार्ट ही ऐसा है। आगे झुकेंगे वह भी समझते हो। जो होशियार है वह अपने हमजिंस का मान उंचा करेंगे। आज सतगुरूवार है। तुम्हारे उपर अभी अविनाशी बृहस्पति की दशा बैठी है। .....दशायें बैठती हैं ना। किस पर शुक्र को ,किस पर राहु की दशा बैठती है। जो गटर में गिर पड़ते हैं। फिर बहुत टाइम लग जाता है। अपने उपर राहू की दशा न लानी चाहिए। माया बड़ी जोर से थप्पड़ मार देती है। इसलिए सम्भाल करनी चाहिए। हराने से उस्ताद का भी नाम बदनाम होगा। तुम खुशी से कहेंगे हम ब्रह्माकुमारियों का यह प्लैन है (लक्ष्मी–नारायण तरफ इशारा)नर्क का विनाश होना है। भावी टाले नहीं टले। हिस्ट्री मस्ट रिपीटेट। समझाने का .....भी चाहिए ना। बाबा ने यह भी समझाया है सच्चे2 वैष्णव कौन हैं। विष्णुपुरी वायसलेस थी ना। वह ही सच्ची वेजीटेरियन कहे जाते हैं। यहां तो कोई पवित्र है नहीं। यह सब है हद के वेजिटेरियन। वह हैं बेहद के। देवताएं कब विकार में नहीं जाते। उनको हैविन इनको हेल कहा जाता है। ऐसे2 बैठ समझावेंगे तो सब हियर2 करेंगे। वैष्णव नाम कहां से निकाला?विकारों को छोड़ना है। उनको वायसलेस वर्ल्ड कहा जाता है। बाकी इस वेजिटेरियन बनने से क्या होगा?क्या विश्व में शांति होगी। तुम तो चाहते हो विश्व में शांति हो। वेजिटेरियन तो बहुत होते हैं। तो वेजिटेरियन का अर्थ भी समझाना पड़े। वैष्णव है ही विष्णुपुरी। अभी तो है रावणपुरी। यह है वैश्यालय। विषस वर्ल्ड। वह है वायसलेस वर्ल्ड। हेल। कितनी अशांति है। नई दुनियां में शांति रहती है। बाप नई–नई दुनियां स्थापन कर रहे हैं। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का दिल व जान ,सिक व प्रेम से यादप्यार बाद गुडमार्निंग। अच्छा, बच्चों को नमस्ते। अच्छा, बाबा दादाजी नमस्ते। अच्छा, सभी आश्रमवासियों को यादप्यार स्वीकार करना जी। अच्छा, अब विदाई।